महत्वपूर्ण एवं खास

क्या उत्तर भारतीयों का नहीं है गोवा

गोवा बिज फेस्ट में एक नौकरशाह ने कूड़े पर प्रेजेंटेशन दी, जिससे प्रभावित होकर वहां के शहरी नियोजन मंत्री विजय सरदेसाई ने समूचे उत्तर भारतीयों को धरती का सबसे गया-गुजरा जीव बता दिया। मंत्री जी का कहना था कि वह गोवा को दूसरा गुड़गांव नहीं बनने देना चाहते। अपनी ही सरकार की नीतियों के खिलाफ जाते हुए वह बोले कि सस्ती घरेलू पर्यटन की पॉलिसी के चलते गोवा में गंदगी बढ़ रही है। बारी जब सफाई देने की आई तो कहने लगे कि गोवा में रहने का हमारा तरीका अलग है। उनकी इस बात से सहमत हुआ जा सकता है। यह गोवा के लोगों की सरलता और उनकी उत्सवधर्मिता ही है, जिसके चलते हर साल वहां की आबादी के छह गुने लोग खुशी मनाने वहां पहुंचते हैं। ये खुशियां मुफ्त में नहीं आतीं। जो जितना खर्च कर सकता है, करता ही है। कुल मिलाकर हर साल पांच हजार करोड़ रुपये देसी पर्यटकों की जेब से निकलकर गोवा के खजाने में पहुंचते हैं। नौकरशाहों का दिमाग कैसे तकनीकी चीजों में उलझकर अमानवीय हो जाता है, यह समझना मुश्किल नहीं है। मगर शहरी व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिम्मेदार मंत्री ऐसे बयान दे तो सवाल उठता है कि क्या गोवा में सरकार ठीक काम कर रही है? एक आरटीआई के जवाब में पता चला है कि गोवा में हर साल 20 से ज्यादा विदेशी पर्यटक अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं। केंद्रीय पर्यटन मंत्री दो-दो साल का आंकड़ा संसद में रखते हुए बताते हैं कि देश भर में पर्यटकों पर जितने हमले गोवा में होते हैं, यूपी और हरियाणा में तो उसके मुकाबले एक चौथाई भी नहीं होते। मांडोवी नदी में चलने वाले कसीनो गोवा की व्यापार व्यवस्था को चौपट करने में जुट गए हैं, जिसका वहां कई संगठन विरोध कर रहे हैं। सफाई में सरदेसाई ने कहा कि उत्तर भारतीय लोग गोवा आकर जमीन खरीद लेते हैं, लेकिन पिछले साल संयुक्त अरब अमीरात में प्रवासी गोवानियों ने इन्हीं सज्जन को घेर लिया था, यह कहते हुए कि उनके घरों पर अवैध कब्जे हो रहे हैं। उस शिकायत पर कोई ठोस कदम उठाए जाने की खबर अब तक नहीं आई है। रूबल की गिरावट और नोटबंदी के बाद आज जब राज्य का पर्यटन उद्योग रास्ते पर आ रहा है तो मंत्री ठीक से अपना काम करने के बजाय पर्यटकों को ही कठघरे में खड़ा करने पर उतारू हैं।

वोटों का स्टार्ट अप

हमने समय-समय पर अपनी चाय का ब्राण्ड चेंज किया है। ब्रूकबाण्ड, ताजमहल से होते हुए वाघ-बकरी पर आ गए हैं। एक ही ब्रांड की पीते-पीते बोर होने लगे थे। इस वास्ते मुंह का जायका भी बदल लिया है। रिटायर्ड होते मास्साब से हमने सवाल किया 'सर, रिटायर होने के बाद की क्या प्लानिंग है?' तो दोनों हाथ कुरते की जेब में डालते हुए वह धीरे से मुस्कुराए और इत्मीनान से बोले, 'चाय की गुमटी लगाने की सोच रहा हूं।' 'कारण' हमने पूछा तो बोले, 'इसमें फायदा है। हर कोई चाय पीना चाहता है। और चाय बनाना आसान भी है। स्वाद की चिंता किसे है? बस हाथ में कप-प्लेट दिखने चाहिए।''मगर आजकल पकौड़ों की बात होने लगी है?' वे बोले, 'एक ही बात है चाय बनाना और पकौड़े तलना। मगर गुमटी तो चाय की ही होगी। मेक इन इण्डिया में हमारा योगदान भी जरूरी है।' 'लेकिन मास्साब पकौड़ा मेक इन इण्डिया का एकदम नया फण्डा है। पकौड़े में मिर्ची वाला सेंसेशन है। इसलिए भैय्या जी चाय बेचते-बेचते पकौड़े तलने लगे। लोग मान रहे हैं कि चाय से तो आगे बढ़े। चौदह में चाय तो उन्नीस में पकौड़े। वैसे तो अभी भी यहां से वहां तक चाय वाले ही दिख रहे हैं। जमे जमाए राजू चाय वाले की तूती बोल रही है। ऐसे में आपकी कौन सुनेगा? और दूसरी बात पकौड़े में संभावनाएं भी अधिक हैं। इसलिए सरकार भी उसे प्रमोट करने में लगी है।

तांदुला के संगम पर शिवरात्रि का चंगोरी मेला

भरदा बगीचा मे शिवनाथ और तांदुला के संगम स्थल मे भरने वाला शिवरात्रि का *चंगोरी मेला*, मेरे बचपन का आइडियल मेला डेस्टिनेशन था। चंगोरी हमारा पुराना पैतृक गांव है। वहीं नदी के इस पार का गांव भरदा मेरा ननिहाल है। 70 के दशक मे हम यहां से 30 किमी दूर बोरई के घर मे रहने चले गये। वर्तमान गांव बोरई से बैलगाड़ी और कभी हमारे 1975 मॉडल वाले हरे रंग के इनफील्ड क्रूस्डर बाइक से जाते थे , जिसे मेरे कुंवारे, कुंजेश भैया प्यार से राधा कहते थे। हमें पूस -माघ के जाड़े मे सुबह नदी मे नहाना सबसे पीड़ा दायक लगता था । पर नहाकर गरम गरम पीली और हलवे जैसी लुदलुदी जलेबी खा कर मजा आ जाता था । शाम के मेले मे फिर तो और भी बहुत कुछ आनंद ,फूग्गा ,तुतरू ,बताशा और मेरा फेवरेट पेठा । भरदा और चंगोरी, दोनों गांव के लोग उत्साह से मेले का उत्सव और आयोजन करते थे । रात को दो गांवों मे होने वाले अलग-अलग नाचा के आवाज से पूरा अतराब गूंजते रहता था। दुर्ग बालोद हाइवे पर, कोनारी से 7 किमी पश्चिम की ओर, भरदा बगीचा मे तांदुला -शिवनाथ संगम पर लगने वाले इस चंगोरी (भरदा बगीचा) के शिवरात्रि मेले की शुरूआत की बात करता हूं। मेरे स्वर्गीय पिताजी श्री भीषम लाल देशमुख के नेतृत्व मे हमारे परिवार ने आसपास के लोगों को साथ लेकर 60 के दशक मे संगम के किनारे चंगोरी तट पर, शिव जी का मंडप वाला चबूतरा नुमा मंदिर बनवाया था। शिवरात्रि के दिन, आसपास के गांववासियों के भीड़ और छोटे से मेले के रूप मे मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा की गई। जल्द बाढ़ से कटाव हो कर चबूतरा तेढ़ा हो कर बीच नदी मे आ गया । बैल-जोड़े और बाद मे पास के गांवों भरदा, निकुम और चंगोरी से मंगाए दो तीन ट्रैक्टरों से भी उस तेढ़े पड़े और रेत मे धंसे चबूतरे को उठाने की बहुत कोशिशें बेकार गई। यह चर्चा फैलती गई और स्थल की मानता शुरू हो गई । कई अफवाह उड़े पर मंदिर नुमा चबूतरा वहां से टस से मस नही हुआ ।इस घटना के बाद महत्ता और प्रसिद्धि बढ़ती गई। मेला मे भीड़ बढने लगी। मेला तभी से अनवरत जारी है । और आसपास मे अच्छी प्रसिद्धि है । पिछले 10-15 सालों से आसपास के जागरुक लोगों व कमेटी के द्वारा चबूतरे के पुनर्निर्माण की कोशिश हुई, पर चबूतरा नही उठा तब, उसी चबूतरे पर अतिरिक्त निर्माण कर उसे सुव्यवस्थित स्वरूप दिया गया। आज संगम पर एक स्टॉप डैम बन गया और चबूतरा-मंदिर सब डूब गया ।अब वहां मंदिर और मेले का भी भरदा और चंगोरी गांव के बीच बटवारा हो गया। दोनों के अपने शिव हैं और अपना शिवरात्रि मेला पर लोगों का श्रद्धा और मेले की भीड़ कम नही हुई बल्कि बढ़ती गयी। दोनों तट पर हर शिवरात्रि भरने वाला मेला और भीड़ गवाह है उस श्रद्धा का, विश्वास का परंपरा का जो आज भी कायम है। हां स्वरूप भी आधुनिक हो गया है। नदी पार भरदा मेरा ननिहाल है। सच है अब मड़ई -मेला का स्वरूप बदल रहा है 7 इसमे न आश्चर्य है न अतिशयोक्ति ! क्योंकि विकास हर चीज़ का होगा। विकास के साथ संस्कृति का ह्रास थोड़ा बहुत होते जाता है पर इसमे आश्चर्य नही। पुरातन की बातें बदलेंगी हीं, कुछ नया होगा तभी तो वह पुराना कहलायेगा 7 पहले बैलगाड़ी, फिर ट्रैक्टर और अब एसी गाड़ियों की भीड़ तो दिखती ही हैं वहीं लोगों की भीड़ आज भी कम नही होती ,उल्टे बढ़ते जा रही है। हमें सब बातों के लिए गुंजाइश रखनी चाहिए 7 अच्छी बात है कि मॉल कल्चर के जमाने मे भी पुराने और बड़े मेले मे लोग जुटते हैं। मेहमाननवाजी के लिए गांव के परिजन व मित्र लोग हमेशा तैयार मिलते हैं। मेले के दिन एक मेला तो मेहमानों से भरे इन घरों मे भी हो जाता है। आखिर लोगों के मिलन के अवसर का नाम ही तो *मेला* है । मेले का स्वरूप अब वैसा रहे या न रहे पर लोगों का इस बहाने संगम होते रहना चाहिए । मैं जरूर सालों से नही जा पाया हूं। पर हमारी जिंदगी भी मेला और शहर के आधुनिकता बाजार भी किसी मेले से कम नही पर हमारी सोच और श्रद्धा साल भर इंतजार के बाद ऐसे मेलों व परंपरा व संस्कृति को कभी खत्म नही होने देंगे आस्था के साथ यही विश्वास है।

लोकतंत्र चलाने का अलोकतांत्रिक रवैया

बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री और प्रमुख विपक्षी नेता खालिदा जिया को विशेष कोर्ट द्वारा भ्रष्टाचार के एक मामले में सुनाई गई पांच साल की कठोर सजा से दो महत्वपूर्ण सवाल उभर कर सामने आए हैं. पहलाः क्या वहां की लोकतांत्रिक संस्थाएं धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र के अस्तित्व को सुरक्षित रख पाएंगी और विद्रोही धार्मिक कट्टर समूहों की पराजय होगी? दूसराः आने वाले दिनों में मुख्य राजनीतिक शक्तियों-अवामी लीग और बांग्लादेश नेशनल पार्टी-के बीच अरसे से जारी तीव्र मतभेद कम होंगे और लोकतांत्रिक प्रक्रिया मजबूत हो पाएगी? दरअसल, पिछले दो दशकों से बांग्लादेश की राजनीतिक-सामाजिक व्यवस्था इन दोनों चुनौतियों से जूझ रही है और देश को एक असफल राज्य बनाने की ओर धकेल रही हैं. बांग्लादेश मुस्लिम बहुल देश है. अपनी आजादी से पहले यह पूर्वी पाकिस्तान हुआ करता था. अपनी भाषायी और जातीय पहचान को बनाए रखने के लिए 1971 में वह पाकिस्तान से अलग होकर बांग्लादेश के नाम से स्वतंत्र और संप्रभु देश बना. ब्रिटिश उपनिवेशवाद से स्वतंत्र होने वाले एशिया-अफ्रीका के अन्य देशों की तरह यहां भी पश्चिमी लोकतांत्रिक व्यवस्था अपनाई गई. लेकिन दुर्भाग्य से पिछले 47 वर्षों के दौरान वहां के अवाम को कई बार सैनिक शासन की मार झेलनी पड़ी जिसके चलते लोकतांत्रिक प्रक्रिया कमजोर हुई. 1991 में बांग्लादेश सैनिक शासन से मुक्त हुआ और लोकतंत्र की वापसी हुई. तब से अब तक अवामी लीग और बांग्लादेश नेशनल पार्टी बारी-बारी से सत्ता में आती रही हैं. प्रधानमंत्री शेख हसीना अवामी लीग का नेतृत्व करती हैं, और बांग्लादेश नेशनल पार्टी का नेतृत्व खालिदा जिया के हाथों में है. शेख हसीना बंगबंधु शेख मुजीबुर रहमान की बेटी हैं, और खालिदा जिया पूर्व राष्ट्रपति जनरल जिया-उर-रहमान की बीवी हैं, जिनकी हत्या 1981 में कर दी गई थी. शेख मुजीब देश के पहले राष्ट्रपति थे. 1975 में उनकी भी हत्या की गई थी. शेख हसीना और खालिदा जिया, दोनों अपनी राजनीतिक विरासत के चलते देश के शीर्ष पद पर आसीन हुई. दोनों में जब भी कोई सत्ता में रहा है, तो उसने अपने विरोधी दलों का दमन करने की कोशिश की है. जाहिर है कि लोकतांत्रिक सरकारों का यह अलोकतांत्रिक रवैया लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर करता है. बांग्लादेश में यही घटित हो रहा है. आम तौर पर जिन देशों में सरकारें जनता के प्रति उत्तरदायित्यों का निर्वाह नहीं कर पातीं और विधि के शासन की अनदेखी होती है, वहां न केवल संस्थाएं कमजोर होती हैं, बल्कि भ्रष्टाचार की भी नई-नई राहें खुल जाती हैं. लैटिन अमेरिका, अफ्रीका, एशिया और मध्य-पूर्व में राजनीतिक नेताओं के भ्रष्टाचार इसके उदाहरण हैं. अधिकतर मामलों में देखा गया कि राजनीतिक नेताओं ने विकासात्मक कार्यों और मानवीय परियोजनाओं के लिए मिली अंतरराष्ट्रीय मदद की राशि को निजी भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ा दिया. ढाका की विशेष अदालत ने खालिदा जिया को 'जिया अनाथालय ट्रस्ट' को विदेशी दान के तौर पर मिले करीब 1.6 करोड़ रुपये के गबन के मामले में सजा सुनाई है. खालिदा को दिसम्बर में होने वाले चुनाव से बेदखल किया जाता है, तो भीषण रक्तपात की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता. यहां की अस्थिरता भारत के लिए भी खतरा पैदा कर सकती है.

कुशल पेशेवरों की अहमियत

इन दिनों दुनियाभर में जैसे-जैसे आर्थिक विकास बढ़ने का परिदृश्य दिखाई दे रहा है वैसे-वैसे भारत के कुशल पेशेवरों की मांग बढ़ती जा रही है. यद्यपि दुनिया के कई विकसित देश प्रवासियों के लिए रोजगार के दरवाजे बंद करते हुए दिखाई दे रहे हैं, लेकिन भारत की प्रतिभाओं और भारत के कुशल पेशेवरों की विशिष्ट उपयोगिता के कारण विकसित और विकासशील देशों में महत्त्व बना हुआ है. कई विकसित और विकासशील देश भारतीय प्रतिभाओं के लिए अपने दरवाजे बंद नहीं कर पा रहे हैं. हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने पहले 'स्टेट ऑफ द यूनियन एड्रेस' में मेरिट बेस्ड इमिग्रेशन पॉलिसी की वकालत की. साथ ही उन्होंने वीजा में अलग-अलग देशों का कटा सिस्टम खत्म करने का संकेत दिया. इसका सबसे ज्यादा लाभ भारतीय समुदाय को होगा.स्टेट ऑफ द यूनियन एड्रेस में प्रवासियों को लेकर ट्रंप के बदले हुए रुख से पूरे अमेरिका में रहने वाले भारतीय समुदाय और भारत के कुशल प्रोफेशनल्स बहुत उत्साहित हैं. ऐसे में इनके द्वारा व्हाइट हाउस के सामने ट्रंप की योग्यता आधारित आव्रजन नीति के समर्थन में एक रैली निकाली गई. इस रैली में यहां काम कर रहे सैकड़ों भारतीय कुशल पेशेवर अपने बच्चों और जीवनसाथी सहित शामिल हुए. इनमें श्रमिक, ग्रीन कार्ड का इंतजार करने कर्मचारी और उनके साथी कुछ अमेरिकी भी शामिल थे. रैली में लोग कैलिफोर्निया, टेक्सास, शिकागो, फ्लोरिडा, न्यूयार्क और मैसाच्युसेट्स तक से आए थे जो दशकों से अमेरिका में रह रहे हैं. उन्होंने ट्रंप से अपील की कि वह देशों के हिसाब से वैध स्थायी निवास की सीमा का अंत करें ताकि उच्च काल प्राप्त भारतीय श्रमिकों को ग्रीन कार्ड मिलने में आ रही दिक्कतें दूर हों. उन्होंने कहा, उच्च काल प्राप्त भारतीय श्रमिकों को हजारों की संख्या में ग्रीन कार्ड जारी करने से उन्हें अपनी क्षमताओं का पूर्ण प्रदर्शन करने में मदद मिलेगी, जिससे अमेरिका में वृद्धि और संपन्नता आएगी.

इसी तरह से दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों के संगठन एसोसिएशन ऑफ साउथ ईस्ट एशियन नेशन्स (आसियान) के 10 देशों इंडनेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर, मलेशिया, ब्रुनेई, थाइलैंड, म्यांमार, लाओस, वियतनाम और कंबोडिया के राष्ट्र प्रमुखों ने पिछले माह 25 जनवरी को भारत के कुशल पेशेवरों के सहयोग से कारोबार विस्तार की बात कही है।

कहां हम कितने स्वस्थ

नीति आयोग द्वारा जारी हेल्थ इंडेक्स अलग-अलग राज्यों में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति पर अच्छी रोशनी डालता है। इसके मुताबिक, बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के मामले में केरल बड़े राज्यों में अव्वल है, जबकि यूपी इस श्रेणी में सबसे निचले पायदान पर है। सालाना परफॉर्मेंस के लिहाज से झारखंड सबसे आगे है। छोटे राज्यों की श्रेणी में मिजोरम सबसे ऊपर है, जबकि केंद्रशासित क्षेत्रों में लक्षद्वीप ने यह स्थान हासिल किया है। विभिन्न राज्यों के बीच स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने की दिशा में स्वस्थ प्रतिद्वंद्विता शुरू कराने के लिहाज से नीति आयोग की यह पहल खासी अहम है। आयोग के सीईओ अमिताभ कांत के मुताबिक इस रैंकिंग के पीछे आयोग का मकसद यह है कि अच्छा प्रदर्शन करने वाले राज्यों को तारीफ मिले ताकि वे और अच्छा करने को प्रोत्साहित हों। जो राज्य अच्छा नहीं कर पाए हैं उन्हें स्वाभाविक रूप से शर्मिंदगी झेलनी पड़ेगी, जो उन्हें अपने प्रदर्शन का स्तर सुधारने को प्रेरित करेगी। रैंकिंग तय करने में तीन प्रमुख कारक रहे। पहला और सबसे बड़ा मानक बनाया गया स्वास्थ्य संबंधी नतीजों को, जिसका वेटेज 70 फीसदी रखा गया। दूसरा मानक था गवर्नेंस और सूचना (12 फीसदी) और तीसरा था सरकारी खर्च और प्रक्रियाओं का (18 फीसदी)। जिन राज्यों की सरकारें स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति को बेहतर करने की जरूरत चुनावी मजबूरियों के तहत ही महसूस करती आई है,

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं

1. थकान, शिथिलता 3. समर्थवान 5. सिलसिला, जोड़मेल 6. आलसी, अलसाय हुआ 8. गुलाम, सेवक,नौकर 10. नर्म, मुलायम, कोमल 13. सूर्य, सूरज 14. अधीनता, मातहत, अंतर्गत 17. पढ़ने का सार्वजनिक स्थान 19. ईमानवाला, जो बेईमान न हो 22. खेत जोतने का यंत्र, समाधान 23. संतप्त, दुःखी, उदास 24. किस्सा, कहानी.

ऊपर से नीचे

2. आंखों में लगाया जाने वाला काला पदार्थ, अंजन 3. मध्य प्रदेश की एक जिला 4. क्षमा करने योग्य 5. तारने वाला, उद्धारक 6. धरोहर, थाती 7. कुशल, कुशलता पूर्वक 8. पत्नी, भार्या 9. विनतीपूर्वक, बाअदब 11. मार्गदर्शक, पथप्रदर्शक (उर्दू) 12. औरत, नारी 15, आवारापन 16. आश्रय, सहारा, शरण 18. किसी चीज को पाने की तीव्र इच्छा 19. भगवान, ईश्वर 20. गमन न करने वाला, पहाड़, बहूमूल्य पत्थर, संख्या सूचक एक शब्द 21. मूल्य, कीमत.

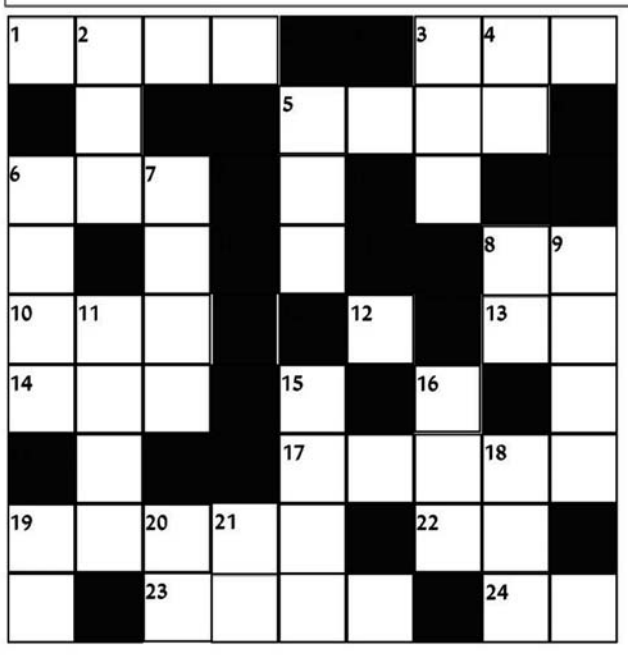

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 19 का हल

बे	चै	न	■	प	ना	ह	■	■
व	■	वा	■	रि	श्ता	■	■	मा
फा	र	सी	■	वा	■	म	न्न	त
■	सी	■	द	र	वा	जा	■	ह
ब	द	मा	श	■	द	ल	ग	त
हू	■	न	ह	र	■	■	हा	■
■	स	हा	रा	■	म	हा	रा	जा
■	श	नि	■	भा	र्या	■	ई	■
ग	र्त	■	व	र	दा	न	■	■

सू-दोकू

	8				1		5	
6			8			2		3
	3				2		1	
		3		9		5		4
5			3				9	
		4		2				6
4			2		3		6	
		6				8		7
	2	9	7		6			

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.19 का हल

5	3	9	7	4	8	6	2	1
2	1	6	5	9	3	4	7	6
4	7	8	1	6	2	3	5	9
3	6	1	8	5	9	2	4	7
8	5	2	3	7	4	1	9	6
7	9	4	2	1	6	8	3	5
6	4	7	9	2	1	5	6	3
1	8	5	4	3	7	9	6	2
9	2	3	6	8	5	7	1	4

राशिफल

मेष- आपको दिन के पहले हिस्से में दूसरों को आर्थिक मदद करने में ही अपना समय गुजारना पड़ सकता है।

वृष- आज दिन की शुरूआत नौकरी से जुड़ी समस्याओं को हल करने से होगी। प्यार के मामले में आज का दिन ठीक है।

मिथुन- कभी कभार आर्थिक मामलों में दूसरों की बात सुनने में कोई परहेज नहीं है।

कर्क- आज आपके पास खुद को साबित करने के कई मौके आएंगे। उन मौके को पहचानकर उन पर खरा उतरना आपकी जिम्मेदारी है।

सिंह- बिजनस के सिलसिले में किसी की सलाह लेने की जरूरत पड़ सकती है।

कन्या- आज कई जिम्मेदारियां निभाने का दिन है। बिजनस में किसी तरह का जोखिम उठाने का काम करना फायदेमंद नहीं होगा।

तुला- आज आप अपनी पुरानी देनदारी चुकाने में कामयाब हो जाएंगे। कुछ जरूरी सामान की शापिंग करनी पड़ सकती है।

वृश्चिक- आज का दिन आपको बहुत व्यस्त रखेगा। कोई पुराना दोस्त अचानक आपके सामने आकर खड़ा हो सकता है।

धनु- आज ऑफिस में कुछ नए अधिकार दिए जा सकते हैं। किसी क्रिएटिव काम में भी आपकी रूचि बढ़ेगी।

मकर- ऑफिस में आपके प्रमोशन या सैलरी बढ़ाने की बात चल रही है। अपनी उमंगो पर काबू रखें।

कुंभ- आज दिन के पहले हिस्से में छुटपुट धन का लाभ होने की संभावना है।

मीन- अपना काम करते रहें। सफलता एक दिन जरूर आपके कदम चूमेगी।